1 तीमुथियुस

1 पौलुस की ओर से, जो हमारे उद्धार करने वाले
परमेश्वर और हमारी आशा मसीह यीशु के आदेश
से मसीह यीशु का प्रेरित बना है,

2तिमुथियुस को जो विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र है,
परम पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की
ओर से अनुग्रह, दया और शांति प्राप्त हो।

झूठे उपदेशों के विरोध में चेतावनी

3मकिदुनिया जाते समय मैंने तुझसे जो इफिसुस में
ठहरे रहने को कहा था, मैं अब भी उसी आग्रह को
दोहरा रहा हूँ। ताकि तू वहाँ कुछ लोगों को झूठी
शिक्षाएँ देते रहने, 4काल्पनिक कहानियों और अनन्त
वंशावलियों पर जो लड़ाई–झगड़ों को बढ़ावा देती हैं
और परमेश्वर के उस प्रयोजन को सिद्ध नहीं होने देतीं,
जो विश्वास पर टिका है, ध्यान देने से रोक सके। 5इस
आग्रह का प्रयोजन है वह प्रेम जो पवित्र हृदय, उत्तम
चेतना और छल रहित विश्वास से उत्पन्न होता है।
6कुछ लोग तो इन बातों से छिटक कर भटक गये हैं
और बेकार के वाद–विवादों में जा फँसे हैं। 7वे व्यवस्था
के विधान के उपदेशक तो बनना चाहते हैं, पर जो
कुछ वे कह रहे हैं या जिन बातों पर वे बहुत बल दे
रहे हैं, उन तक को वे नहीं समझते।

8हम अब यह जानते हैं कि यदि कोई व्यवस्था के
विधान का ठीक ठीक प्रकार से प्रयोग करे, तो व्यवस्था
उत्तम है। 9अर्थात् यह जानते हुए कि व्यवस्था का
विधान धर्मियों के लिये नहीं बल्कि उद्दण्डों, विद्रोहियों,
अश्रद्धालुओं, पापियों, अपवित्रों, अधार्मिकों, माता–पिता
को मार डालने वालों, हत्यारों, 10व्यभिचारियों, समलिंग
कामुकों, शोषण कर्त्ताओं, मिथ्या वादियों, कसम तोड़ने
वालों या ऐसे ही अन्य कामों के लिए हैं, जो उत्तम शिक्षा
के विरोध में हैं। 11वह शिक्षा परमेश्वर के महिमा–मय
सुसमाचार के अनुकूल है। वह सुधन्य परमेश्वर से
प्राप्त होती है। और उसे मुझे सौंपा गया है।

परमेश्वर के अनुग्रह का धन्यवाद

12मैं, हमारे प्रभु यीशु मसीह का धन्यवाद करता हूँ।
मुझे उसी ने शक्ति दी है। उसने मुझे विश्वसनीय समझ
कर अपनी सेवा में नियुक्त किया है। 13यद्यपि पहले
मैं उसका अपमान करने वाला, सताने वाला तथा एक
अविनीत व्यक्ति था किन्तु मुझ पर दया की गयी क्योंकि
एक अविश्वासी के रूप में यह नहीं जानते हुए कि मैं
क्या कुछ कर रहा हूँ, मैंने सब कुछ किया 14और प्रभु
का अनुग्रह मुझे बहुतायत से मिला, और साथ ही
वह विश्वास और प्रेम भी जो मसीह यीशु में है। 15यह
कथन सत्य है और हर किसी के स्वीकार करने योग्य
है कि यीशु मसीह इस संसार में पापियों का उद्धार
करने के लिए आया है। फिर मैं तो सब से बड़ा पापी हूँ।
16और इसीलिये तो मुझ पर दया की गयी। कि मसीह
यीशु एक बड़े पापी के रूप में मेरा उपयोग करते हुए
आगे चल कर जो लोग उसमें विश्वास ग्रहण करेंगे,
उनके लिये अनंत जीवन प्राप्ति के हेतु एक उदाहरण
के रूप में मुझे स्थापित कर अपनी असीम सहनशीलता
प्रदर्शित कर सके। 17अब उस अनन्त सम्राट अविनाशी,
अदृश्य एक मात्र परमेश्वर का युग युगान्तर तक सम्मान
और महिमा होती रहे। आमीन!

18मेरे पुत्र तीमुथियुस, भविष्यवक्ताओं के वचनों के
अनुसार बहुत पहले से ही तेरे सम्बन्ध में जो भविष्यवाणियाँ
कर दी गयी थीं, मैं तुझे ये आदेश दे रहा हूँ, ताकि तू
उनके अनुसार 19विश्वास और उत्तम चेतना से युक्त हो
कर नेकी की लड़ाई लड़ सके। कुछ ऐसे हैं जिनकी
उत्तम चेतना और विश्वास नष्ट हो गये हैं। 20हुमिनयुस
और सिकंदर ऐसे ही हैं। मैंने उन्हें शैतान को सौंप दिया
है ताकि उन्हें परमेश्वर के विरोध में परमेश्वर की
निन्दा करने से रोकने का पाठ पढ़ाया जा सके।

स्त्री–पुरुषों के लिये कुछ नियम

2 सबसे पहले मेरा विशेष रूप से यह निवेदन है कि
सबके लिये आवेदन, प्रार्थनाएँ, अनुरोध और सब
व्यक्तियों की ओर से धन्यवाद दिए जाएँ। 2शासकों और
सभी अधिकारियों को धन्यवाद दिये जाएँ। ताकि हम
चैन के साथ शांतिपूर्वक सम्पूर्ण श्रद्धा और परमेश्वर
के प्रति सम्मान से पूर्ण जीवन जी सकें। 3यह हमारे
उद्धारकर्त्ता परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला है। यह
उत्तम है। 4वह सभी व्यक्तियों का उद्धार चाहता है और
चाहता है कि वे सत्य को पहचानें 5 क्योंकि परमेश्वर
एक ही है और मनुष्य तथा परमेश्वर के बीच में

मध्यस्थ भी एक ही है। वह स्वयं एक मनुष्य है, मसीह
यीशु। 6उसने सब लोगों के लिये स्वयं को फिरौती के
रूप में दे डाला है। इस प्रकार उसने उचित समय पर
इसकी साक्षी दी। 7तथा इसी साक्षी का प्रचार करने के
लिये मुझे एक प्रचारक और प्रेरित नियुक्त किया गया।
(यह मैं सत्य कह रहा हूँ, झूठ नहीं) मुझे विधर्मियों के
लिये विश्वास तथा सत्य के उपदेशक के रूप में भी
ठहराया गया।

8इसीलिये मेरी इच्छा है कि हर कहीं सब पुरुष पवित्र
हाथों को ऊपर उठाकर परमेश्वर के प्रति समर्पित हो
बिना किसी क्रोध अथवा मन–मुटाव के प्रार्थना करें।

9इसी प्रकार स्त्रियों से भी मैं यह चाहता हूँ कि वे
सीधी–सादी वेश–भूषा में शालीनता और आत्म–नियन्त्रण
के साथ रहें। अपने आप को सजाने सँवारने के लिये वे
केशों की वेणियाँ न सजायें तथा सोने, मोतियों और
बहुमूल्य वस्त्रों से श्रृंगार न करें, 10बल्कि ऐसी स्त्रियों
को जो अपने आप को परमेश्वर की उपासिका मानती
हैं, उनके लिए उचित यह है कि वे स्वयं को उत्तम
कार्यों से सजायें।

11एक स्त्री को चाहिये कि वह शांत भाव से समग्र
समर्पण के साथ शिक्षा ग्रहण करे। 12मैं यह नहीं चाहता
कि कोई स्त्री किसी पुरुष को सिखाए पढ़ाये अथवा उस
पर शासन करे। बल्कि उसे तो चुपचाप ही रहना
चाहिए। 13क्योंकि आदम को पहले बनाया गया था और
तब पीछे हव्वा को। 14आदम को बहकाया नहीं जा
सका था किन्तु स्त्री को बहका लिया गया और वह पाप
में पतित हो गयी। 15किन्तु यदि वे माता के कर्तव्यों को
निभाते हुए विश्वास, प्रेम, पवित्रता और परमेश्वर के
प्रति समर्पण में बनी रहें तो उद्धार को अवश्य प्राप्त
करेंगी।

कलीसिया के निरीक्षक

3 यह एक विश्वास करने योग्य कथन है कि यदि
कोई निरीक्षक बनना चाहता है तो वह एक अच्छे
काम की इच्छा रखता है। 2अब देखो उसे एक ऐसा
जीवन जीना चाहिये जिसकी लोग न्यायसंगत आलोचना
न कर पायें। उसके एक ही पत्नी होनी चाहिये। उसे
शालीन होना चाहिये, आत्मसंयमी, सुशील तथा अतिथि
सत्कार करने वाला एवं शिक्षा देने में निपुण होना
चाहिये। 3वह पियक्कड़ नहीं होना चाहिये, न ही उसे
झगड़ालू होना चाहिये। उसे तो सज्जन तथा शांति–प्रिय
होना चाहिये। उसे पैसे का प्रेमी नहीं होना चाहिये।
4अपने परिवार का वह अच्छा प्रबन्धक हो तथा उसके
बच्चे उसके नियन्त्रण में रहते हों। उसका पूरा सम्मान
करते हों। 5(यदि कोई अपने परिवार का ही प्रबन्ध
करना नहीं जानता तो वह परमेश्वर की कलीसिया का
प्रबन्ध कैसे कर पायेगा?) 6वह एक नया शिष्य नहीं
होना चाहिये ताकि वह अहंकार से फूल न जाये। और
उसे शैतान का जैसा ही दण्ड पाना पड़े। 7इसके अतिरिक्त
बाहर के लोगों में भी उसका अच्छा नाम हो ताकि वह
किसी आलोचना में फँस कर शैतान के फंदे में न पड़
जाये।

कलीसिया के सेवक

8इसी प्रकार कलीसिया के सेवकों को भी सम्मानीय
होना चाहिये जिसके शब्दों पर विश्वास किया जाता हो।
मदिरा पान में उसकी रुचि नहीं होनी चाहिये। बुरे रास्तों
से उन्हें धन कमाने का इच्छुक नहीं होना चाहिये।
9उन्हें तो पवित्र मन से हमारे विश्वास के गहन सत्यों
को थामे रखना चाहिये। 10इनको भी पहले निरीक्षकों
के समान परखा जाना चाहिये। फिर यदि उनके विरोध
में कुछ न हो तभी इन्हें कलीसिया के सेवक के रूप में
सेवा–कार्य करने देना चाहिये। 11इसी प्रकार स्त्रियों को
भी सम्मान के योग्य होना चाहिए। वे निंदक नहीं होनी
चाहियें बल्कि शालीन और हर बात में विश्वसनीय
होनी चाहियें। 12कलीसिया के सेवक के केवल एक ही
पत्नी होनी चाहिये तथा उसे अपने बाल–बच्चों तथा
अपने घरानों का अच्छा प्रबन्धक होना चाहिये। 13क्योंकि
यदि वे कलीसिया के ऐसे सेवक के रूप में होंगे जो
उत्तम सेवा प्रदान करते हैं, तो वे अपने लिये सम्मानपूर्ण
स्थान अर्जित करेंगे। यीशु मसीह के प्रति विश्वास में
निश्चय ही उनकी आस्था होगी।

हमारे जीवन का रहस्य

14मैं इस आशा के साथ तुम्हें ये बातें लिख रहा हूँ कि
जल्दी ही तुम्हारे पास आऊँगा। 15यदि मुझे आने में
समय लग जाये तो तुम्हें पता रहे कि परमेश्वर के
परिवार में, जो सजीव परमेश्वर की कलीसिया है,
किसी को अपना व्यवहार कैसा रखना चाहिये। कलीसिया
ही सत्य की नींव और आधार स्तम्भ है। 16हमारे धर्म
के सत्य का रहस्य निस्सन्देह महान् है: वह नर देह धर
प्रकट हुआ, आत्मा ने उसे नेक साधा, स्वर्गदूतों ने उसे
देखा, वह राष्टों में प्रचारित हुआ। जग ने उस पर
विश्वास किया, और उसे महिमा में ऊपर उठाया गया।

झूठे उपदेशकों से सचेत रहो

4 आत्मा ने स्पष्ट रूप से कहा है कि आगे चल कर
कुछ लोग भटकाने वाले झूठे भविष्यवक्ताओं के
उपदेशों और दुष्टात्माओं की शिक्षा पर ध्यान देने लगेंगे
और विश्वास से भटक जायेंगे। 2उन झूठे पाखण्डी लोगों
के कारण ऐसा होगा जिनका मन मानो तपते लोहे से
दाग दिया गया हो। 3वे विवाह का निषेध करेंगे। कुछ
वस्तुएँ खाने को मना करेंगे जिन्हें परमेश्वर के विश्वासियों
तथा जो सत्य को पहचानते हैं, उनके लिये धन्यवाद

देकर ग्रहण कर लेने को बनाया गया है। 4क्योंकि
परमेश्वर की रची हर वस्तु उत्तम है तथा कोई भी
वस्तु त्यागने योग्य नहीं है बशर्ते उसे धन्यवाद के साथ
ग्रहण किया जाये। 5क्योंकि वह परमेश्वर के वचन
और प्रार्थना से पवित्र हो जाती है।

मसीह के उत्तम सेवक बनो

6यदि तुम भाइयों को इन बातों का ध्यान दिलाते
रहोगे तो मसीह यीशु के ऐसे उत्तम सेवक ठहरोगे जिसका
पालन–पोषण, विश्वास के द्वारा और उसी सच्ची शिक्षा
के द्वारा होता है जिसे तू ने ग्रहण किया है। 7बुढ़ियाओं
की परमेश्वर विहीन कल्पित कथाओं से दूर रहो तथा
परमेश्वर की सेवा के लिये अपने को साधने में लगे
रहो। 8क्योंकि शारीरिक साधना से तो थोड़ा सा ही लाभ
होता है जबकि परमेश्वर की सेवा हर प्रकार से मूल्यवान
है क्योंकि इसमें आज के समय और आने वाले जीवन
के लिये दिया गया आशीर्वाद समाया हुआ है। 9इस बात
पर पूरी तरह निर्भर किया जा सकता है और यह पूरी
तरह ग्रहण करने योग्य है। 10और हम लोग इसीलिये
कठिन परिश्रम करते हुए जूझते रहते हैं। हमने अपनी
आशाएँ सबके, विशेष कर विश्वासियों के, उद्धारकर्त्ता
सजीव परमेश्वर पर टिका दी हैं।

11इन्हीं बातों का आदेश और उपदेश दो। 12तू अभी
युवक है। इसी से कोई तुझे तुच्छ न समझे। बल्कि तू
अपनी बात–चीत, चाल–चलन, प्रेम–प्रकाशन, अपने
विश्वास और पवित्र जीवन से विश्वासियों के लिये एक
उदाहरण बन जा। 13जब तक मैं आऊँ तू शास्त्रों के
सार्वजनिक पाठ करने, उपदेश और शिक्षा देने में
अपने आप को लगाये रख। 14तुझे जो वरदान प्राप्त है,
तू उसका उपयोग कर यह तुझे नबियों की भविष्यवाणी
के परिणामस्वरूप बुजुर्गों के द्वारा तुझ पर हाथ रख
कर दिया गया है। 15इन बातों पर पूरा ध्यान लगाये
रख। इन ही में स्थित रह ताकि तेरी प्रगति सब लोगों के
सामने प्रकट हो। 16अपने जीवन और उपदेशों का
विशेष ध्यान रख। उन ही पर टिका रह क्योंकि ऐसा
आचरण करते रहने से तू स्वयं अपने आपका और
अपने सुनने वालों का उद्धार करेगा।

व्यवहार के कुछ नियम

5 किसी बड़ी आयु के व्यक्ति के साथ कठोरता से
मत बोलो, बल्कि उन्हें पिता के रूप में देखते हुए
उनके प्रति विनम्र रहो। अपने से छोटों के साथ भाइयों
जैसा बर्ताव करो। 2बड़ी महिलाओं को माँ समझो तथा
युवा स्त्रियों को अपनी बहन समझ कर पूर्ण पवित्रता के
साथ बर्ताव करो।

3उन विधवाओं का विशेष ध्यान रखो जो वास्तव में
विधवा हैं। 4किन्तु यदि किसी विधवा के पुत्र–पुत्री अथवा
नाती–पोते हैं तो उन्हें सबसे पहले अपने धर्म पर चलते
हुए अपने परिवार की देखभाल करना सीखना चाहिये।
उन्हें चाहिये कि वे अपने माता–पिताओं के पालन–पोषण
का बदला चुकायें क्योंकि इससे परमेश्वर प्रसन्न होता
है। 5वह स्त्री जो वास्तव में विधवा है और जिसका
ध्यान रखने वाला कोई नहीं है, तथा परमेश्वर ही
जिसकी आशाओं का सहारा है वह दिन रात विनती
तथा प्रार्थना में लगी रहती है। 6किन्तु विषय भोग की
दास विधवा जीते जी मरे हुए के समान है। 7इसलिये
विश्वासी लोगों को इन बातों का (उनकी सहायता का)
आदेश दो ताकि कोई भी उनकी आलोचना न कर
पाये। 8किन्तु यदि कोई अपने रिश्तेदारों, विशेषकर
अपने परिवार के सदस्यों की सहायता नहीं करता, तो
वह विश्वास से फिर गया है तथा किसी अविश्वासी से
भी अधिक बुरा है।

9उन विधवाओं की विशेष सूची में जो आर्थिक सहायता
ले रही हैं उसी विधवा का नाम लिखा जाये जो कम से
कम साठ साल की हो चुकी हो तथा जो पतिव्रता रही
हो 10तथा जो बाल बच्चों को पालते हुए, अतिथि सत्कार
करते हुए, पवित्र लोगों के पांव धोते हुए दुखियों की
सहायता करते हुए, अच्छे कामों के प्रति समर्पित हो
कर सब तरह के उत्तम कार्यों के लिये जानी–मानी
जाती हो।

11किन्तु युवती–विधवाओं को इस सूची में सम्मिलित
मत करो क्योंकि मसीह के प्रति उनके समर्पण पर जब
उनकी विषय वासना पूर्ण इच्छाएँ हावी होती हैं तो वे
फिर विवाह करना चाहती हैं। 12वे अपराधिनी हैं क्योंकि
उन्होंने अपनी मूलभूत प्रतिज्ञा को तोड़ा है। 13इसके
अतिरिक्त उन्हें आलस की आदत पड़ जाती है। वे एक
घर से दूसरे घर घूमती फिरती हैं तथा वे न केवल
आलसी हो जाती हैं, बल्कि वे बातूनी बन कर लोगों के
कामों में टाँग अड़ाने लगती हैं और ऐसी बातें बोलने
लगती हैं जो उन्हें नहीं बोलनी चाहियें। 14इसलिए मैं
चाहता हूँ कि युवती– विधवाएँ विवाह कर लें और
संतान का पालनपोषण करते हुए अपने घर बार की
देखभाल करें ताकि हमारे शत्रुओं को हम पर कटाक्ष
करने का कोई अवसर न मिल पाये। 15मैं यह इसलिये
बता रहा हूँ कि कुछ विधवाएँ भटक कर शैतान के
पीछे चलने लगी हैं।

16यदि किसी विश्वासी महिला के घर में विधवाएँ हैं
तो उसे उनकी सहायता स्वयं करनी चाहिए और
कलीसिया पर कोई भार नहीं डालना चाहिये ताकि
कलीसिया सच्ची विधवाओं की सहायता कर सके।

17जो बुजुर्ग कलीसिया की उत्तम अगुआई करते हैं, वे
दुगुने सम्मान के पात्र होने चाहियें। विशेष कर वे जिनका
काम उपदेश देना और पढ़ाना है। 18क्योंकि शास्त्र में
कहा गया है, “बैल जब खलिहान में हो तो उसका मुँह

मत बाँधो।'* तथा, "मज़दूर को अपनी मज़दूरी पाने का
अधिकार है।"*

19किसी बुज़ुर्ग पर लगाये गये किसी लांछन को तब
तक स्वीकार मत करो जब तक दो या तीन गवाहियाँ न
हों। 20जो सदा पाप में लगे रहते हैं उन्हें सब के सामने
डाँटो-फटकारो ताकि बाकी के लोग भी डरें।

21परमेश्वर, यीशु मसीह और चुने हुए स्वर्गदूतों के
सामने मैं सचाई के साथ आदेश देता हूँ कि तू बिना
किसी पूर्वाग्रह के इन बातों का पालन कर। पक्षपात के
साथ कोई काम मत कर।

22बिना विचारे किसी को कलीसिया का मुखिया
बनाने के लिए उस पर जल्दी में हाथ मत रख। किसी
के पापों में भागीदार मत बन। अपने को सदा पवित्र
रख। 23केवल पानी ही मत पीता रह। बल्कि अपने
हाज़मे और बार बार बीमार पड़ने से बचने के लिए
थोड़ा सा दाखरस भी ले लिया कर।

24कुछ लोगों के पाप स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाते हैं
और न्याय के लिये प्रस्तुत कर दिये जाते हैं किन्तु दूसरे
लोगों के पाप बाद में प्रकट होते हैं। 25इसी प्रकार भले
कार्य भी स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाते हैं किन्तु जो प्रकट
नहीं होते वे भी छिपे नहीं रह सकते।

6 लोग जो अंधविश्वासियों के जूए के नीचे दास बने
हैं, उन्हें अपने स्वामियों को सम्मान के योग्य
समझना चाहिये ताकि परमेश्वर के नाम और हमारे
उपदेशों की निन्दा न हो। 2और ऐसे दासों को भी
जिनके स्वामी विश्वासी हैं, बस इसलिये कि वे उनके
धर्म भाई हैं, उनके प्रति कम सम्मान नहीं दिखाना
चाहिये, बल्कि उन्हें तो अपने स्वामियों की और अधिक
सेवा करनी चाहिये क्योंकि जिन्हें इसका लाभ मिल रहा
है, वे विश्वासी हैं, जिन्हें वे प्रेम करते हैं।

मिथ्या उपदेश और सच्चा धन

इन बातों को सिखाते रहो तथा इनका प्रचार करते
रहो। 3यदि कोई इनसे भिन्न बातें सिखाता है तथा हमारे
प्रभु यीशु मसीह के उन सद् वचनों को नहीं मानता है
तथा भक्ति से परिपूर्ण शिक्षा से सहमत नहीं है, 4तो वह
अहंकार में फूला है तथा कुछ भी नहीं जानता है। वह
तो कुतर्क करने और शब्दों को लेकर झगड़ने के रोग
से घिरा है। इन बातों से तो ईर्ष्या, बैर, निन्दा-भाव तथा
गाली-गलौज 5एवम् उन लोगों के बीच जिनकी बुद्धि
बिगड़ गयी है, निरन्तर बने रहने वाले मतभेद पैदा होते
हैं, वे सत्य से वंचित हैं। ऐसे लोगों का विचार है कि
परमेश्वर की सेवा धन कमाने का ही एक साधन है।

6निश्चय ही परमेश्वर की सेवा-भक्ति से ही व्यक्ति
सम्पन्न बनता है। इसी से संतोष मिलता है। 7क्योंकि हम
संसार में न तो कुछ लेकर आये थे और न ही यहाँ से
कुछ लेकर जा पाएँगे। 8सो यदि हमारे पास रोटी और
कपड़ा है तो हम उसी में सन्तुष्ट हैं। 9किन्तु वे जो
धनवान बनना चाहते हैं, प्रलोभनों में पड़कर जाल में
फँस जाते हैं तथा उन्हें ऐसी अनेक मूर्खतापूर्ण और
विनाशकारी इच्छाएँ घेर लेती हैं जो लोगों को पतन
और विनाश की खाई में ढकेल देती हैं। 10क्योंकि धन
का प्रेम हर प्रकार की बुराई को जन्म देता है। कुछ
लोग अपनी इच्छाओं के कारण ही विश्वास से भटक
गये हैं और उन्होंने अपने लिये महान दुख की सृष्टि
कर ली है।

याद रखने योग्य बातें

11किन्तु हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से दूर रह
तथा धार्मिकता, भक्तिपूर्ण सेवा, विश्वास, प्रेम, धैर्य
और सज्जनता में लगा रह। 12हमारा विश्वास जिस
उत्तम स्पर्द्धा की अपेक्षा करता है, तू उसी के लिये संघर्ष
करता रह और अपने लिये अनन्त जीवन को अर्जित
कर ले। तुझे उसी के लिये बुलाया गया है। तूने बहुत से
साक्षियों के सामने उसे बहुत अच्छी तरह स्वीकारा है।
13परमेश्वर के सामने, जो सबको जीवन देता है तथा
यीशु मसीह के सम्मुख जिसने पुन्तियुस पिलातुस के
सामने बहुत अच्छी साक्षी दी थी, मैं तुझे यह आदेश देता
हूँ कि 14जब तक हमारा प्रभु यीशु मसीह प्रकट होता है,
तब तक तुझे जो आदेश दिया गया है, तू उसी पर बिना
कोई कमी छोड़े हुए निर्दोष भाव से चलता रह।

15वह उस परम धन्य, एक छत्र, राजाओं के राजा
और सम्राटों के प्रभु को उचित समय आने पर प्रकट
कर देगा। 16वह अगम्य प्रकाश का निवासी है। उसे न
किसी ने देखा है, न कोई देख सकता है। उसका सम्मान
और उसकी अनन्त शक्ति का विस्तार होता रहे। आमीन।

17वर्तमान युग की वस्तुओं के कारण जो धनवान
बने हुए हैं, उन्हें आज्ञा दे कि वे अभिमान न करें।
अथवा उस धन से जो शीघ्र चला जाएगा कोई आशा न
रखें। परमेश्वर पर ही अपनी आशा टिकायें जो हमें
हमारे आनन्द के लिये सब कुछ भरपूर देता है। 18उन्हें
आज्ञा दे कि वे अच्छे-अच्छे काम करें। उत्तम कामों से
ही धनी बनें। उदार रहें और दूसरों के साथ अपनी
वस्तुएँ बाँटें। 19ऐसा करने से ही वे एक स्वर्गीय कोष
का संचय करेंगे जो भविष्य के लिये सुदृढ़ नींव सिद्ध
होगा। इसी से वे सच्चे जीवन को थामे रहेंगे।

20तीमुथियुस, तुझे जो सौंपा गया है, तू उसकी रक्षाकर।
व्यर्थ की सांसारिक बातों से बचा रह। तथा जो "मिथ्या
ज्ञान" से सम्बन्धित व्यर्थ के विरोधी विश्वास हैं, उनसे
दूर रह क्योंकि 21कुछ लोग उन्हें स्वीकार करते हुए
विश्वास से डिग गये हैं। परमेश्वर का अनुग्रह तुम्हारे
साथ रहे।

"बैल ... बाँधो " व्यवस्था. 25:4

"मजदूर ... है" लूका 10:7